कोरोना

प्रकृति की चेतावनी

संपादक - प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कोरोना प्रकृति की चेतावनी

(साझा संकलन)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-095-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020,
मूल्य - 80.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK EDITED BY DR PRITI SAMKIT SURANA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कोरोना प्रकृति की चेतावनी

सादर नमन,

बार-बार उग्रता दर्शाकर प्रकृति ने कभी भूकंप, कभी ज्वालामुखी, कभी सुनामी, कभी तूफानों, सड़क दुर्घटनाओं, रेल दुर्घटनाओं, वायुयानों की दुर्घटनाएं, धर्म के नाम पर दंगे, ओजोन में छेद, प्रदूषण और अनेक असाध्य बीमारियों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। पर न जनसंख्या में नियंत्रण हूआ, न सामाजिक संतुलन स्थापित हूआ, न आर्थिक विषमताओं का खात्मा हूआ। बस बढ़ती गई विषमताएं,व्यभिचार और बुराइयाँ बस प्रकृति का क्रोध बढ़ना ही था सो बढ़ा।

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं वहाँ नजदीकियाँ दूरियों में बदलती नज़र आ रही है, सुविधाएं कमतर हो रही हैं। जिसके पास धन का अंबार हो वो भी और जो भुखमरी का शिकार हो लेकिन कोरोना के लिए सब बराबर थे। आज कोरोना ने सिखा दिया अधिकतम से न्यूनतम में जीना कैसे संभव है।

बहूतों को समझ आ गया कि सदियों पहले लोग जिन कायदों, साफ सफाई, दूरियाँ और अनेक ऐसे नियम जो आज हम पालन करने को विवश हैं वह वास्तव में हमारी संस्कृति है, जिसका पालन सम्पूर्ण विश्व कर रहा है।

क्या आपको नहीं लगता कि प्रकृति की इस विनाश सूचक चेतावनी में भारत के लिए एक अवसर ही 'विश्वगुरु बनने का'? आइये पढ़ते है रचनाकारों के विचार कि क्या वाकई कोरोना:- प्रकृति प्रदत्त चेतावनी है?

सादर आभार
संस्थापक एवं सम्पादक
डॉ प्रीति समकित सुराना
अन्तरा शब्दशक्ति

कोरोना प्रकृति की चेतावनी

1.	डॉ प्रीति समकित सुराना	6-14
2.	कीर्ति प्रदीप वर्मा	14-18
3.	पिंकी परूथी "अनामिका"	18-20
4.	प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'	20
5.	ललिता नारायणी	21
6.	डॉ. वासिफ़ काज़ी	21-22
7.	हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्वनी'	23
8.	ॠतु कोचर, कटंगी	24
9.	श्यामसागर	25-26
10.	रमा "प्रेम-शांति"- बालाघाट	27-28
11.	सोनम लड़ी वाला	28-29
12.	मीना विवेक जैन	29
13.	डा० भारती वर्मा बौड़ाई	30-31
14.	वंदना दुबे	32-33

1.

कोरोना क्या है?- कोरोनावायरस (Coronavirus) कई प्रकार के विषाणुओं (वायरस) का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह आरएनए वायरस होते हैं। इनके कारण मानवों में श्वास तंत्र संक्रमण पैदा हो सकता है जिसकी गहनता हल्की (जैसे सर्दी-जुकाम) से लेकर अति गम्भीर (जैसे, मृत्यु) तक हो सकती है। इनकी रोकथाम के लिए कोई टीका (वैक्सीन) या विषाणुरोधी (antiviral) अभी उपलब्ध नहीं है और उपचार के लिए प्राणी की अपने प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। अभी तक रोगलक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डीहाइड्रेशन, ज्वर, आदि) का उपचार किया जाता है ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे।

कोरोना वायरस का वंश:-

अल्फ़ाकोरोनावायरस (Alphacoronavirus)

बेटाकोरोनावायरस (Betacoronavirus)

गामाकोरोनावायरस(Gammacoronavirus)

डेल्टाकोरोनावायरस (Deltacoronavirus)

वायरस के कोरोनाविरिडाए कुल के ये चार सदस्य है जहाँ अल्फ़ाकोरोनावायरस और बेटाकोरोनावायरस मूल रूप से चमगादड़ में संक्रमण करने वाले वायरस हैं, वहाँ गामाकोरोनावायरस और डेल्टाकोरोनावायरस पक्षियों और सूअरों में संक्रमण करने वाले वायरस के वंशज हैं।

हाल ही में WHO ने इसका नाम COVID-19 रखा:-

चीन के वूहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवेल कोरोनावायरस इसी समूह के वायरसों का एक उदहारण है, जिसका संक्रमण सन् 2019-20 काल में तेज़ी से उभरकर 2019-20 वुहान कोरोना

वायरस प्रकोप के रूप में फैलता जा रहा है। हाल ही में WHO ने इसका नाम COVID-19 रखा।

वैक्सीन अनुसंधान:-

दुनिया भर के कई संगठन टीकों का विकास कर रहे हैं या ये कहे कि एंटीवायरल दवा का परीक्षण कर रहे हैं। चीन में, चीनी रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीसीडीसी) ने नावेल कोरोनवायरस के खिलाफ टीके विकसित करना शुरू कर दिया है और निमोनिया के लिए मौजूदा दवा की प्रभावशीलता का परीक्षण कर रहा है।साथ ही, हांगकांग विश्वविद्यालय की एक टीम ने घोषणा किया है कि एक नया टीका विकसित किया गया है, लेकिन मनुष्यों पर क्लीनिकल परीक्षण करने से पहले जानवरों पर परीक्षण किए जाने की आवश्यकता है। रूसी उपभोक्ता स्वास्थ्य वाचडॉग Rospotrebnadzor ने WHO की सिफारिशों को मानते हुए एक वैक्सीन का विकास शुरू किया।

पश्चिमी देशों में, संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (NIH) अप्रैल 2020 तक वैक्सीन के मानव परीक्षणों की उम्मीद कर रहा है, और कैम्ब्रिज-मैसाचुसेट्स आधारित मॉडेर्ना कंपनी CEPI के फंडिंग से mRNA टीका विकसित कर रहा है।

संक्रमित लोगों में ये लक्षण हो सकते हैं:-

- बहती नाक
- गले में खराश
- खांसी
- बुखार
- सांस लेने में दिक्कत (गंभीर मामलों में)

कुछ मामलों में, यह रोग घातक भी हो सकता है. बुज़ुर्ग और ऐसे लोग जिन्हें दूसरी स्वास्थ्य समस्याएं (जैसे कि अस्थमा, डायबिटीज़ या दिल की बीमारी) हैं उनके लिए यह वायरस ज़्यादा खतरनाक साबित हो सकता है।

आप संक्रमण को होने से रोक सकते हैं, अगर आप:-

1. अल्कोहल वाले सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करते हैं या साबुन और पानी से अक्सर अपने हाथ साफ़ करते हैं।
2. खांसने और छींकने के दौरान टिश्यू पेपर से या कोहनी को मोड़कर, अपनी नाक और मुंह को ढक रहे हैं।
3. ठंड या फ्लू जैसे लक्षणों वाले किसी भी व्यक्ति के साथ निकट संपर्क (1 मीटर या 3 फीट) से बचते हैं।
4. अगर आप में इस रोग के कुछ लक्षण हैं, तो पूरी तरह ठीक होने तक घर पर ही रहें।

आपको इन लक्षणों में राहत मिल सकती है, अगर आप:-

1. आराम करते हैं और सोते हैं
2. खुद को किसी तरह गर्म रखते हैं 3.गुनगुना पानी, तुलसी और गिलोय का काढ़ा, कॉफी आदि पीते हैं
4. खूब पानी या दूसरी तरल चीज़ें लेते हैं
5. गले की खराश और खांसी को कम करने के लिए, कमरे में ह्यूमिडिफ़ायर का इस्तेमाल करते हैं और गर्म पानी से नहाते हैं,।

भारत में कोरोनोवायरस के प्रकोप के कारण लगाया गया स्वेच्छा से **जनता कर्फ्यू:-**

जनता कर्फ्यू (Janata Curfew) जनता द्वारा खुद पर लगाया गया कर्फ्यू (अर्थात् निषेधाज्ञा) है। इस शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की जनता से आग्रह किया कि वे सभी आने वाले रविवार 22 मार्च को सुबह 7 बजे से रात 9 बजे तक जनता कर्फ्यू का पालन करें। जनता कर्फ्यू को उन्होने "जनता के लिए, जनता द्वारा, खुद पर लगाया गया कर्फ्यू" कहकर परिभाषित किया।

जनता कर्फ्यू अंग्रेजी के लॉकडाउन से भिन्न है। जनता कर्फ्यू व्यक्ति पर अनिवार्य नहीं होता जबकि लॉकडाउन शासन द्वारा जनता

पर आरोपित किया जाता है तथा जनता द्वारा इसका पालन करना अनिवार्य होता है।

जनता कर्फ्यू का स्वागत:-

वर्गों, विचारधाराओं की सारी सीमाओं को तोड़ते हुए पूरे देश ने प्रधानमन्त्री की इस पहल का एक मत से स्वागत किया। कई लोगों ने जनता कर्फ्यू को लगातार एक सप्ताह के लिए जारी रखने की इच्छा जताई। 22 मार्च की पूर्व सन्धया को विभिन्न टीवी चैनलों में चले संवादों में भी कई विद्वानों ने जनता कर्फ्यू को लगातार एक सप्ताह के लिए जारी रखने की बात को एक अत्यावश्यक कदम बताया। परन्तु वहीं, गरीब वर्ग के कई लोगों के लिए यह चिन्ता का कारण है कि लम्बे समय तक बिना कमाई के वे कैसे अपनी आजिविका चलाएंगे। शायद इसी बात को ध्यान में रखकर जनता कर्फ्यू के लिए सिर्फ एक दिन का समय उचित माना गया।

22 मार्च, 2020 को जनता कर्फ्यू 14 घंटे के लिए रहा। पुलिस, चिकित्सा सेवाओं, मीडिया, होम डिलीवरी पेशेवरों और अग्निशामकों जैसी आवश्यक सेवाओं से सम्बन्धित लोगो को छोड़कर सभी को जनता कर्फ्यू में हिस्सा लेना आवश्यक है (परन्तु अनिवार्य नहीं)।

शाम 5 बजे सेवाकर्मियों के लिए श्रद्धा की अभिव्यक्ति:-

जनता कर्फ्यू के साथ-साथ मोदी जी ने ठीक शाम 5:00 बजे सभी स्वास्थ्य एवं सेवाकर्मियों, योद्धाओं एवं पुलिस के सम्मान और हौसला बुलन्द करने के अपने घर के द्वार से ताली, घँटी, शँख बजाने का आव्हान भी किया।

शाम 5 बजते ही देश भर में थालियों, घंटियों तथा शंख की अवाज गूंजने लगी। अपने घरों के मुख्य द्वारों तथा बालकनियों पर खड़े होकर लोगों ने लगातार कई मिनटों तक ताली, थाली, घंटी तथा शंख बजाए।

पूरे देश को एकजुट देख कई बहुत प्रफुल्लित थे तो कई बहुत भावुक भी हुए। सभी को भारतीय होने पर गर्व हो रहा था।

भारत लॉकडाउन:-

पूरे विश्व के अतिविकसित देशों की स्थिति को देखते हुए 24 मार्च मंगलवार की रात 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के नाम अपने अपने संबोधन में कहा कि आज रात 12 बजे से पूरे देश में संपूर्ण लॉक डाउन होने जा रहा है। इस दौरान पीएम जनता कर्फ्यू के बाद कोरोना वायरस की महामारी से निपटने के लिए कड़े फैसले का एलान किया। पीएम मोदी ने कहा कि इस दौरान सिर्फ एक और एक काम करें कि बस अपने घर में रहें। किसी सूरत में बाहर न निकलें। देश के हर राज्य को, हर केंद्र शासित प्रदेश को, हर जिले, हर गांव, हर कस्बे, हर गली-मोहल्ले को अब लॉकडाउन किया जा रहा है। इन प्रयासों को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए क्योंकि कुछ लोगों की लापरवाही, कुछ लोगों की गलत सोच, आपको, आपके बच्चों को, आपके माता पिता को, आपके परिवार को, आपके दोस्तों को, पूरे देश को बहुत बड़ी मुश्किल में झोंक देगी।

कोरोना को फैलने से रोकने के लिए अगर हम लोग सोशल दूरी बनाकर रखेंगे या बाहर कम निकलेंगे और दूसरों के संपर्क में नहीं आएंगे तो कोरोना वायरस फैलने का खतरा बहुत कम हो जाएगा।

कोरोना के कारण भारत में 21 दिन का लॉकडाउन बहुत जरूरी है क्योंकि:-

भारत में होता है ये सब?

1. आस्था के नाम पर लंगर, भंडारा, प्रसादी में अस्वच्छता और भीड़भाड़, भगदड़ सही है?
2. विवाह आदि परिवारक समारोहों का संक्षिप्तीकरण जो आर्थिक विषमता को भी परिलक्षित करता है, ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिद्वंद्विता को भी बढ़ावा नहीं देता?

3. धार्मिक स्थलों का तेजी से निर्माण केवल पत्तरों पर नाम टंकित करवाने के लिए?
4. क्या अस्पतालों, स्कूलों और व्यवस्थित यातायात और सड़क निर्माण से आवश्यक है आम सभाएं, मंदिरों के शिलाविन्यास और लोगों की आस्था से खिलवाड़?
5. देश घूम न पाए अडोस-पड़ोस से वैमनस्य है लेकिन स्टेटस के चलते विदेश भ्रमण आम बात हो गई है क्या यही पैसा देश के पर्यटन व्यवसाय को सुदृढ़ करने हेतु काम नही आता?
6. खुद को हिन्दू कहने वाले माँस-मदिरा, जुआ-सट्टा, कालाबाज़ारी और कालाधन लेकर सफेदपोश रहकर खुद से नज़र मिला पाते हैं?
7. खुद से ज्यादा दूसरों की जिंदगी में रुचि रखने वाले लोग क्या खुद पर, खुद के परिवार पर ध्यान दे पाते हैं, सामंजस्य बिठा पाते हैं?

कतई नहीं

"मानव को प्रकृति ने दी है चेतावनी"

वो इक्कीस दिन बहुत महत्पूर्ण थे भारत में सोशल डिस्टेंसिंग के लिए क्योंकि 21 दिन लॉकडाउन के बीच 15 दिन पड़ रहे है बड़े त्योहार हैं।

- 25 मार्च बुधवार गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रि प्रारंभ, घटस्थापना, भगवान झुलेलाल जयंती
- 26 मार्च गुरुवार- चेटी चंड
- 27 मार्च शुक्रवार- गणगौर तीज व्रत, मत्स्यावतार जयंती
- 28 मार्च शनिवार- मासिक विनायक चतुर्थी
- 1 अप्रैल बुधवार- दुर्गा महाष्टमी
- 2 अप्रैल गुरुवार- राम नवमी, दुर्गा महानवमी
- 3 अप्रैल शुक्रवार- चैत्र नवरात्रि पारणा
- 4 अप्रैल शनिवार- कामदा एकादशी
- 5 अप्रैल रविवार- प्रदोष व्रत (शुक्ल पक्ष)

- 6 अप्रैल सोम्वार- महवीर जयंती
- 8 अप्रैल बुधवार- हनुमान जयंती
- 10 अप्रैल शुक्रवार- गुड फ्राईडे
- 11 अप्रैल शनिवार- संकष्टी चतुर्थी
- 12 अप्रैल रविवार- गुरु तेगबहादुर जयंती
- 13 अप्रैल सोमवार- मेष संक्रांति, कंवरराम जयंती
- 14 अप्रैल मंगलवार- डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती

इन सब त्योहारों में बहुत भीड़ रहती है जिससे कोरोना वायरस फैलने का डर रहेगा।

आप यथाशक्ति दान-धर्म करना चाहते हैं?

1. मानवता कायम रखें।
2. रोटी, कपड़ा और आवास का दान दें।
3. शिक्षा, कला, विशिष्टताओं को विस्तार दें।
4. मंदिरों की बजाय अस्पतालों एवं शिक्षालयों का निर्माण करवाएं।
5. जूठन न छोड़ें।
6. जरूरतमंदों की सहायता करें।
7. अनाथ बच्चों, वृद्धों और वृक्षों को संरक्षण दें।
8. साक्षरता, स्वच्छता, स्वपोषण, संस्कृति, संस्कार, स्वावलंबन, सक्षमीकरण के प्रति जागरूकता फैलाएं, रोजगार के अवसर प्रदान करें।
9. प्रवचनकर्ताओं, बाबागिरी, मठाधीशों और भ्रष्टाचारियों से दूर रहें।
10. जो बातें अमल कर सकते हैं वही कहें।

गलतफहमी:-

कुछ लोग इस गलतफहमी में हैं कि सोशल डिस्टेंसिंग केवल बीमार लोगों के लिए आवश्यक है। ये सोचना सही नहीं कि सोशल डिस्टेंसिंग हर नागरिक के लिए है, हर परिवार के लिए है, परिवार के हर सदस्य के लिए है। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि कोरोना से बचने का इसके अलावा कोई तरीका नहीं है, कोई रास्ता नहीं

है। कोरोना को फैलने से रोकना है, तो इसके संक्रमण की सायकिल को तोड़ना ही होगा। कोरोना से प्रभावित रहे चीन, अमेरिका, इटली, ईरान आदि देशों का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि इन सभी देशों के दो महीनों के अध्ययन से जो निष्कर्ष निकल रहा है, और एक्सपर्ट्स भी यही कह रहे हैं कि कोरोना से प्रभावी मुकाबले के लिए एकमात्र विकल्प है सामजिक दूरी। समाज के लोग एक दूसरे से अलग-थलग रहेंगे तो यह बीमारी भी उनसे दूर रहेगी।

वायरस से दूर और खुद के करीब लाती है सोशल डिस्टेंसिंग:-

कुछ फायदे:-

1. खुद के साथ समय बिताने का मौका: रोजमर्रा की भागदौड़ भरी जिंदगी में शायद ही किसी को वक्त मिल पाता हो कि वह खुद से बात से बात करे और अपना मूल्यांकन करे। ऐसा कई मनोचिकित्सक भी मानते हैं कि खुद से बात करना इंसान के लिए बहुत जरूरी होता है।
2. पूरी कर सकते हैं शौक: सोशल डिस्टेंसिंग के दौरान जो वक्त आपको अपने लिए मिलता है, उसमें आप अपनी उन हॉबीज को पूरा कर सकते हैं जो व्यस्त जिंदगी के चलते कहीं पीछे छूट गई थी।
3. जो पल पीछे छूट रहे थे: हममें से कई लोग हैं जो बिजी होने के नाते अपने बच्चों के बचपन के उन कीमती पलों को मिस करते हैं जो लौटकर दोबारा नहीं आएंगे। तो इन दिनों में आप अपने बच्चों के साथ उन मस्तीभरे पलों को जी सकते हैं। इससे जहां आपका मन तरोताजा होगा, तो वहीं बच्चों के साथ खेलकर आपके शरीर में भी फुर्ती आ जाएगी।
4. वारयस से भी दूरी: सोशल डिस्टेंसिंग में आप किसी शख्स से कम से कम तीन मीटर तक दूर रहते हैं और हाथ वगैरह भी नहीं मिलाते हैं। तो किसी से वायरस तो क्या, किसी के शरीर के जर्म्स तक आप तक नहीं पहुंचते हैं।

इंफेक्शन कम फैले और बीमारी थम जाए, इसलिए एक-दूसरे से कम संपर्क रखने को ही सोशल दूरी कहा जाता है। बहुत सारे लोगों का एक

साथ जमा होना, कोई बिल्डिंग बंद करने और प्रोग्राम कैंसल करना भी इसी का हिस्सा है। कोरोना वायरस को रोकने के लिए सोशल दूरी बहुत जरूरी है।

हम प्रकृति को छेड़ते रहते हैं उसके स्वभाव के विपरीत
प्रकृति ने दी है सजा अकेले में समय रहा है बीत
अब भी जो हम न समझे तो चुग जाएगी चिड़िया खेत
मानवता हारेगी और एक वायरस की हो जाएगी जीत।

डॉ प्रीति समकित सुराना

2.

आईये पहले यह जान लें कि महामारी है क्या?

जब कोई भी बीमारी व्यक्ति, समूह, समाज, देश से होती हुई अनेक देशों में फैलती है और जिसका इलाज नहीं मिल पाता उसे महामारी घोषित किया जाता है। और इतिहास गवाह है कि युद्धों से इतनी जनहानि नही होती जितनी महामारी से होती है, हां इनसे निपटना असंभव नहीं किंतु चुनौतीपूर्ण होता है।

अब तक की महामारियों में "ब्लैक डेथ" (प्लेग) नामक बीमारी जो यूरोप, एशिया और अफ्रीका में फैल गई थी इससे करीब 20 करोड लोगों की मृत्यु हुई और यह दुनिया की सर्वाधिक विनाशकारी महामारी थी, शायद इसे ही हमारी दादी नानी काला बुखार कहा करती थी।

उस समय इलाज संभव नही थे तो रोगी को गाँव से बाहर रखा जाता था।

इसके बाद हैजा पहली ऐसी महामारी हुई जिसकी शुरुआत भारत से हुई इससे दुनिया भर में 10,00000 लोग मरे। कोरोना के पहले स्वाइन फ्लू आया जिससे दुनिया में लाखों लोग मरे, ऐसी अनेक महामारी हैं जो संसार में फैली।

प्रकृति ने इंसान को बहुत ही प्यार से पाला पोसा सब कुछ दिया प्राणवायु से लेकर भोजन, फल-फूल औषधि, जल और जीवन यापन करने का हर वह साधन जो आवश्यक होता है।

लेकिन मनुष्य ने प्रकृति को क्या दिया?

कूड़ा करकट के ढेर पन्नियाँ, मलमूत्र, रसायन आदि जंगलों की कटाई कंक्रीट के जंगल गाड़ी मोटर, एसी आदि से प्रदूषण... आखिर प्रकृति भी कहां तक सहन करेगी? कभी न कभी तो फट पड़ेगी! शायद यही प्रकृति का कोप है जो प्रकोप बन कर मानव के ऊपर कहर ढाता है। इस तरह प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए सामूहिक एवं व्यक्तिगत तौर पर सावधानियां रखने की आवश्यकता है -

सरकार ने सम्पूर्ण 21 दिन तक सम्पूर्ण लॉकडाउन घोषित किया गया है। जिसका कड़ाई से पालन करना अति आवश्यक है परंतु कहीं-कहीं इस का मजाक बनाया जा रहा है और कहीं अवहेलना भी की जा रही है लेकिन इस बीमारी से लड़ने का एक ही उपाय है सिर्फ और सिर्फ संपूर्ण लॉकडाउन अर्थात प्रत्येक मनुष्य अपने अपने घरों में कैद होकर सामाजिक दूरी बनाये रखे। लॉकडाउन के दौरान आपने क्या महसूस किया?

क्या आपको नहीं लगता कि प्रकृति हमें कुछ इशारा कर रही है? हमसे कुछ कहना चाह रही हैं? आज कराहती हुई प्रकृति को कुछ क़रार आया है- मेरे एक गीत की पंक्तियां आज प्रस्तुत हैं-

मैं धरा हूँ ज़रा तुम सम्हालो मुझे
न सम्हालोगे एक रोज़ मर जाऊंगी.....

अब जब हम सभी घरों में बैठे हैं चारों ओर शांति शांति है न गाड़ियों का धुँआँ न हॉर्न की चिल्लपौं, किसी प्रकार का कोई प्रदूषण नहीं सड़कों पर बस सन्नाटा पसरा है यहाँ तक कि आप पंछियों कीट पतंगों की आवाजों को सुन सकते हैं... प्रकृति की स्वर लहरियों को महसूस कर सकते हैं, जो शायद हम कभी हम तक नही पहुँच पाती।

आज प्रत्येक जल स्रोत जैसे नदियां तालाब एकदम शांत हैं नदियों में नहाना, कपड़े धोने जैसी गंदगी नहीं हो रही है, ऐसा प्रतीत होता है जैसे नदियों ने भी चैन की सांस ली है। संसार के अनेक स्थानों पर नदियां तथा झीलें एकदम स्वच्छ हो गई है जैसा प्रकृति ने उन्हें बनाया था।

सड़क के किनारे लगे पेड़ वनस्पतियां जो सिर्फ और सिर्फ धुएं में सांस लेते थे आज वे खुली हवा को महसूस कर रहे हैं खुलकर सांस ले रहे हैं और ऐसा लगता है कि वे हम सब पर खिलखिला कर हँस रहे हैं।

जीवजंतु पशु पक्षी सभी आनंद का अनुभव कर रहे है जैसे संसार के इस चिड़िया घर मे हम सब कैद है औऱ वे स्वछंद विचरण कर रहे हैं। अनेक स्थानों की खबरें आई हैं जहां समुंदर में डॉल्फिन और अन्य जंतु किनारे पर निर्भय होकर विचरण कर रहे हैं।

शायद 21 दिन के लाक डाउन में ग्लोबल वार्मिंग एवं "एयर क्वालिटी इंडेक्स" पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़े।

यह तो रही प्रकृति की बात! देखा जाए तो साथ रहकर हमारे पारिवारिक संबंध और मजबूत होंगे, जहाँ जीवन की आपाधापी में कभी फुर्सत से बैठने का समय नहीं मिलता था आज बच्चे पिता के साथ खेल रहे हैं, बेटे बहू अपने बूढ़े माता-पिता के साथ बैठकर उनके जीवन के अनुभवों को सुन रहे हैं, कहीं हम अपने पुराने एल्बम निकालकर स्मृतियों को टटोल रहे,कहीं अपने पुराने शौक जैसे चित्रकारी, बागवानी, संगीत, लेखन आदि भी ताजा कर सकते हैं। कभी मिलता था इतना समय? सभी अपने-अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों के कुशल क्षेम पूछ रहे हैं, और एक दूसरे की चिंता कर रहे हैं यही तो प्रकृति चाहती हैं। बस भागमभाग, रेलमपेल में हमारा शरीर भी मशीन बन गया, मशीन को भी चलते चलते आराम की आवश्यकता होती है, सभी अपने अपने घरों में आराम से रहे ध्यान योग करें और स्वस्थ रहें।

आजकल महानगरों में और छोटे शहरों में सभी जगह बाहर खाना एवं टिफिन सेवा का बहुत प्रचलन है जो घर के खाने जैसा शुद्ध नहीं होता, आज सभी अपने-अपने घरों में शुद्ध सात्विक भोजन कर रहे हैं जिससे निश्चित ही स्वास्थ्य पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

हां हम सभी का नैतिक कर्तव्य बनता है कि हमारे आस पास कोई भूखा न रहे जहां तक हो सके हम उनकी मदद करें गाय और कुत्ते भूखे घूमते हुए दिखाई दे तो उन्हें भी भोजन दे और इन 21 दिनों को सजा के तौर पर नहीं एक प्रकृति के तोहफे की तरह ले तो हमारे जीवन को एक नई दिशा मिलेगी और शायद प्रकृति की मंशा पूर्ण हो।

बस अब आवश्यक है कि सरकारी आदेशों का पालन किया जाए इन्हें हल्के में न लिया जाये। 14 दिन डॉक्टरी निगरानी में रहा जाये तो पूर्णतः स्वस्थ हुआ जा सकता है।

महामारी से डरने की नहीं डटकर मुकाबला करने की आवश्यकता होती है अगर किसी को बीमारी हो भी जाती है तो डरे नही बल्कि सावधान रहें और चिकित्सकों के कहे अनुसार दवाएं लें इसे हल्के में न लें।

बार-बार हाथों को धोना सैनिटाइज करना अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना, बेडशीट टावल आदि नित्य बदलना। अगर किसी को यह हो जाए तो उसे अलग कमरे में रखकर खाने के बर्तन आदि भी अलग ही रखना चाहिए। सर्दी जुकाम छींक आने पर मुँह पर रुमाल रखा जाए या हाथ रखा जाए। किसी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दिया जाए और न ही सोशल मीडिया पर बिना सोचे समझे अफवाह फैलाई जाए।

बुद्धिजीवी वर्ग अपने आसपास की बस्तियों में जागरूकता फैलाए एवं लोगों को इस बीमारी से निपटने और लड़ने के उपाय समझाएं। तो प्रकृति का इशारा समझें और प्रकृति के साथ जीना सीखिए। नित्य व्यायाम, ध्यान, योग आदि करते रहे।

परमात्मा का ध्यान करें विश्व के कल्याण के लिए प्रार्थना करें।
सांझ सवेरे धूप दीप अवश्य करें जिससे वातावरण स्वच्छ रहे।
स्वस्थ रहें निरोग रहे।

नमस्ते करो, कोरोना से डरो न
हैंड शेक करो न, कोरोना से डरो न।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

3.

बचपन में बहुत से किस्से कहानियाँ सुनते थे, कुछ धार्मिक, कुछ लोक कथाएँ, कुछ इतिहास की वगैरह वगैरह। उन बचपन की कहानियों का मानस पटल पर गहरा प्रभाव रहा, कि जीवन में बहुत बड़ी बड़ी समस्याएँ आती रहीं और मैं सम रहकर निभाती रही, बात स्वयं की प्रशंसा की नहीं है किन्तु उसका यह परिणाम हुआ कि बहुत से परिवार जनों, मित्रों, सहयोगियों को सकारात्मक उत्तर मिल जाते थे, उनकी समस्याओं के।

देखा जाए तो किसी भी समस्या का हल उसके साथ ही होता है, आवश्यकता होती है धैर्य और सहनशीलता की ।

बचपन की कहानियों ने थोड़ा मजबूत बनाया, तो हमें अपने भविष्य यानी आज की पीढ़ी के बच्चों को ज्ञानवर्धक जानकारी, वीरता के इतिहास, योग और प्राणायाम को दैनिक दिनचर्या में जोड़ना चाहिए, कथाओं के माध्यम से उनका मनोरंजन करना चाहिए।

बड़े होने पर आध्यात्मिक कार्यो में मन लगाने पर आश्चर्य जनक परिवर्तन आए जीवन में। सचमुच में जीवन के रहस्य को समझने के लिए भगवद्‌गीता का अध्ययन करना चाहिए बल्कि अपने जीवन में उतारना चाहिए।

ऐसा नहीं है कि आप सभी यह पहली बार पढ़ रहे हैं या जो कुछ मैंने अबतक लिखा आप जानते नहीं हैं, पर होता क्या है कि जैसे माता और गुरु बालक को बार-बार बोलकर पहाड़े याद कराते हैं और वह जीवन भर उन्हें भूलता नहीं है, उसी प्रकार अभ्यास करने से सारी कलाएँ और विषय कोई सीख सकता है।

अब चाहे कोरोना हो या और कोई वायरस या बीमारी, दो पहलू होते हैं, एक वैज्ञानिक, दूसरा आध्यात्मिक। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो तो शरीर भौतिक और रसायनिक पदार्थों के क्रियाओं और मिश्रण के फलस्वरूप बना है और कुछ रासायनिक और भौतिक क्रियाओं के फलस्वरूप समाप्त हो जाएगा। उसी तरह कोरोना का वायरस भी जन्म लिया है व वैज्ञानिकों के द्वारा शोध कार्यों से शीघ्र ही परिणाम आएगा और यह समाप्त हो जाएगा।

आध्यात्मिक पक्ष यह भी है कि मानव जाति अपने स्वार्थ के लिए, लोभ और मोह के लिए, भौतिक सुख सुविधाओं के उपभोग के लिए निरंतर प्रकृति का दोहन करती आ रही है, जैसा कि कहा जाता है कि हर क्रिया की प्रतिक्रिया भी होती है।

गीता में सात प्रकार की माँ ओं का उल्लेख है, जिसमें एक प्रकृति माँ है। इस प्रकृति माँ की सुरक्षा हमारा परम कर्तव्य है। इसके विपरीत हम अपने कार्यकलापों द्वारा इसका भक्षण और शोषण करते आ रहे हैं, तो क्या परिणाम सुखद आएँगे, बिलकुल नहीं। हमारे ही कर्म का फल हम भुगत रहे हैं। ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस सृष्टि का निर्माण मनुष्य को ईश्वर के निकट आने का बहुत सुन्दर अवसर है।

ईश्वर के शरणागत होकर, प्रार्थना करें कि इस विपत्ति के समय मानवजाति की रक्षा करें। कोरोना के विनाश का कोई साधन जुटा दें,

और शपथ लें कि प्रकृति की रक्षा में उठाए गए हर कदम पर अपनी सहभागिता देंगे।

ईश्वर के आदेशानुसार ही इस महामारी का अन्त होगा, यदि यह महामारी केवल चेतावनी है तो जाने कितने तांडव और देखने बाकी हैं। मन को शान्ति आध्यात्मिक राह पर ही मिलेगी ।

पिंकी परूथी "अनामिका"

4.

विकास का दौर, नित नये अविष्कार, अनुसंधान अंतरिक्ष के रहस्य। नये नये प्रयोगो से सब को अचंभित कर दिया।

दूसरी और प्रकृति के संसाधनों का अति उपयोग, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण। प्रकृति का नित संतुलन डगमगाया है। दुनिया पर अनेको विपदायें आने लगी।

आज प्रकृति से खिलबाड का परिणाम यह हुआ कि कोरोना नामक वायरस ने दुनिया को दहशत मे डाल दिया।
हजारों लोग मारे जा चुके है। लोग घरों मे बंद है।

यह कोरोना तो प्रकृति की हम मानव जाति को चेतावनी है। कोरोना से सबक नही लिया तो आने बाले समय में प्रकृति का और रौद्र रूप होगा। पता नही कैसे-कैसे रूप में?

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

5.

भारतीय दर्शन में प्रकृति को मां के रूप में पूजा जाता है। मां जो अपने बच्चे को भरपूर ममता, प्यार दुलार, पोषण, के साथ ही मीठी झिड़कियों से उसकी शैतानियों पर रोक लगाये रहती है, अच्छे बुरे की समझ विकसित करने के लिए प्रताड़ना भी देती है, मां की ही तरह प्रकृति भी मानव को सही राह दिखाने के लिए अपने रौद्र रूप में अवतरित होती है।

इससे पहले भी प्रकृति के असंतुलन के दुष्परिणाम जैसे:- असमय वर्षा, ओलावृष्टि, भूकंप, सुनामी, महामारी हैजा, चेचक के रूप में हमारे सामने आते रहे हैं..!

एक भारतीय होने के नाते मुझे 'कोरोना' प्रकृति मां के हाथ में "मदर इंडिया" फिल्म की वह बंदूक लग रही है, जो अपने पुत्र को एक भी गलत कदम आगे न बढ़ने की चेतावनी देती है, और न मानने पर चल भी सकती है सीधा सीने में गोली दाग भी सकती है....

ललिता नारायणी

6.

वर्तमान समय, संकट का समय है यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा क्योंकि कोरोना (कोविड 19) विषाणु का कहर, संपूर्ण विश्व को आतंकित किए हुए है। वैश्विक महामारी का रूप ले चुका कोरोना आज विश्व पटल पर एक विनाशक की भांति उभरा है जो संपूर्ण मानव जाति के अस्तित्व का विनाश कर रहा है। चीन एवं इटली जैसे विकसित देशों में जन धन की अपार क्षति हुई है और अब वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा वाला हमारा देश भारत इसकी गिरफ्त में है परंतु देश के

लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 21 दिवसीय देश बंद से निश्चित ही हम इस आपदा से पार पाने में कामयाब होंगे। यह प्रकृति का कहर है या मानव की स्वार्थपरता से उपजी विभीषिका।

किस को दोष दें? यह दोषारोपण का समय नहीं है, अपितु संकट से सामना करने का है। प्राकृतिक आपदा, विनाशकारी तो होती है साथ ही साथ यह संदेश भी देती है कि मानव को अपनी दिनचर्या, अपना खानपान, अपने परिवेश में परिवर्तन लाना होगा। प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर आज तीन सप्ताह का देशव्यापी बंद, निश्चित ही कोरोना के विनाश का नया अध्याय लिखेगा। बस आवश्यकता है तो संयम, धैर्य और अनुशासित जीवन प्रणाली की, जिसके बलबूते पर ही एक स्वस्थ एवं शक्तिशाली भारत को गढ़ने का स्वप्न हम देख सकते हैं अन्यथा हमारी गैरजिम्मेदाराना हरकतें, न केवल हमको, हमारे अपनों को बल्कि संपूर्ण राष्ट्र को विनाश के मुहाने पर खड़ा कर सकती है।

ख़ैर इलाज से परहेज़ अच्छा ठीक वैसे ही हमें भी इस अग्निपरीक्षा की घड़ी में एकजुटता का परिचय देकर अपने अपने घरों में आत्मनिर्वासित हो जाना चाहिए ताकि हम और हमारी नौनिहाल पीढ़ी, सुनहरे भविष्य के साक्षात दर्शन कर सकें। मेरा एक शेर इस मौके पर अर्ज़ करना चाहूंगा कि -

दिन भी तन्हा हैं और शामें भी मेरी।
इस हसीं क़ैद से मुझे निकालो यारों।।

दर असल अभी अपना घर ही हसीन क़ैद है जिससे रिहाई फिलहाल तो हम नहीं चाहते हैं क्योंकि सुरक्षित रहने का महज यही विकल्प है।

डॉ. वासिफ़ काज़ी

7.

जिस तरह माली बाग को लगाता है और समय-समय पर खरपतवार को हटाता रहता है। तभी बाग खूबसूरत रहता है इसी तरह प्रकृति भी कहीं बाढ़ कहीं भूकंप कहीं ज्वालामुखी कहीं सूखा कहीं अतिवृष्टि से संतुलन बनाती रहती है। इसके पहले भी प्लेग, चेचक आदि महामारी आती रही हैं। हम हिंदू सनातन ग्रंथों में भी पढ़ते हैं, सतयुग से द्वापर तक सुर असुर संग्राम, महाभारत आदि बड़े-बड़े युद्ध हुआ करते थे। जिससे बहुत जन धन की हानि होती थी, मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी की सभ्यता से मिले अवशेषों से पता चलता है, आर्यावर्त प्राचीन काल से ही धन आयुध संपन्न महाद्वीप था। और उस समय लोग सत्य धर्म का आचरण करते हुए तप, तंत्र, मंत्र द्वारा देवीय शक्तियों महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं को काबू में कर लेते थे। आज मनुष्य अधर्मी, लोभी, स्वार्थी हो गया है, वह प्राकृतिक संपदाओं का अति दोहन कर रहा है। मनुष्य को सिर्फ आज की चिंता है आने वाली पीढ़ी कि नहीं।

लेकिन सृष्टि नियंता को तो सारी सृष्टि की चिंता है। आज पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में है। गलती किसकी है, किसकी नहीं, यह सोचने का समय अभी नहीं है। हमें सिर्फ जागरूकता और बचाव की आवश्यकता है। शासन द्वारा दिए जा रहे निर्देशों का पालन करें और करवाएं। तभी हम इस महामारी को समाप्त करने में सफल होंगे।

हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्वनी'

8.

इतिहास गवाह है की जब जब अनुशासन या मर्यादा लांघी जाती है उसका परिणाम निश्चित ही प्रलयकारी होता है फिर चाहे जीव हो अथवा प्रकृति सबके सहने की एक हद होती है सहनशीलता की पराकाष्ठा विनाश के रूप मे दृष्टिगोचर होती ही है। ये प्रकृति की चेतावनी ही तो है जो आज संपूर्ण विश्व कोरोना रूपी आपदा से रूबरू हो रहा है जिसका भयावह रूप लोगों मे महामारी का रूप लेता जा रहा है, जनता कर्फ्यू और सामाजिक दूरी बनाये रखने के सरकार के फैसले निश्चित ही प्रशंसनीय है आज से पहले अनेक युद्ध हुए, बीमारियां आई पर कभी भी पूरे देश का एक साथ संपूर्ण बंद नहीं हुआ, इससे ही हमें समझना है की यह कितनी गंभीर समस्या है,तो जैसा की मोदीजी ने कहा की यदि इन इक्कीस दिनों मे नही संभले तो देश इक्कीस साल पीछे चला जायेगा। और वो होगा ही

क्योंकि वैसे ही इतने लंबे बंद के बाद आर्थिक रूप से देश को परेशानी उठानी ही है उसपर भी इस बंद का उद्देश्य यदि पूरा न हुआ तो परिणाम सभी को भुगतने पड़ेंगे।

तो क्या देश और हम देशवासी इस कीमत को चुकाने के लिए तैयार है, यदि नहीं तो संभल जाएं और इस परिस्थिति से उबरने के लिए बताये गए विभिन्न नियमों का पालन करें।

नही तो हम चाहकर भी इससे होने वाले विनाश को नही रोक पाएंगे और इसका दुष्प्रभाव आने वाली अनेक पीढ़ियों पर होगा। हमारा दृढ निश्चय ही हमें इस मझधार से उबार सकता है।

इसलिए घर पर रहे स्वच्छ रहें सुरक्षित रहें और प्रार्थना करें की यह विपत्ति जल्द ही दूर हो और देश फिर से अखंड भारत के रूप मे सामने आये एकता मे बहुत शक्ति होती है वही शक्ति का परीक्षण हमें करना है यही अनुरोध है आप सबसे।

ऋतु कोचर, कटंगी

9.

आज हम चाँद पर पहुँच चुके हैं, मंगल पर भी जीवन की आशा किरण खोज रहें हैं! ब्रम्हांड के अनसुलझे रहस्यों से पर्दा भी हटा रहें हैं! एक से बढ़कर एक चीजों का अविष्कार रोज हो रहा है!

इन सबके बीच हम जाने अनजाने में प्रकृति के साथ को नगण्य भी करते जा रहें हैं आधुनिकता की इस दौड़ में! शायद इसी का परिणाम आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना नामक महामारी के रूप में भुगत रहा है !

बुद्धजीवियों की माने तो कोरोना विषाणु प्राकृतिक है जो चीन के वुहान शहर से चमगादड़ो और सांप का जूस पीने से लोगो में फैला है! तो कुछ बुद्धजीवियों के अनुसार यह चीन के द्वारा बनाया गया कृतिम विषाणु है जिसे चीन ने दुनिया में अपना वर्चस्व कायम करने के लिए बनाया है!

कोरोना पर आज अलग अलग मत हो सकते परन्तु इस बात से आज कोई इनकार नहीं कर सकता कि, यह वैश्विक महामारी आज अपनी उग्रता के चरम पर है !

इसका मूल कारण प्रकृति से अत्याधिक खिलवाड भी हो सकता है, शायद यही वजह रही होगी जो विश्व स्वास्थ संगठन ने भारत पर इस महामारी की निर्भरता जाहिर की है! क्यों की भी विश्व में एक मात्र ऐसा देश है जहाँ के लोग प्रकृति में अपनी सम्पूर्ण आस्था रखते हैं!

हमारे यहाँ लोग आज भी नदियों, पत्थरो, पेड़ पौधों, जीव जंतुओं आदि को प्रकृति का ही रूप मानकर उनकी पूजा करके प्रकति का सम्मान करते हैं !

वर्तमान में इस महामारी ने दुनिया को एक बार पुनः प्रकृति के आस्तित्व का एहसास करवाया है, वर्ना हम तो निजी स्वार्थ एवं आधुनिकता की इस दौड़ती भीड़ में घर-परिवार, पूजा-पाठ सब लगभग भूल ही चुके थे !

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने अपने जीवन काल में ऐसी भयावह महामारी देखी हो! जिसने सम्पूर्ण विश्व में एक साथ हजारों लोगों को काल के गाल में भेज दिया हो और लोगों को घर में बंद रहने के लिए विवश कर दिया हो! आज विश्व के किसी भी देश के पास कोरोना महामारी का इलाज नहीं है! चाहे उसने कितनी भी प्रगति कर ली हो! अब भी समय है यदि समूचा विश्व अब भी नहीं चेता तो भविष्य में स्थिति और भी भयावह हो सकती है!

शायद प्रकृति ने कोरोना महामारी के रूप में विश्व को चेतावनी दी है की अब भी समय है दुनिया वालो सचेत हो जाओ! प्रकृति के साथ खेलना, और उसका मजाक उड़ाना बंद करो अपनी हद में रहो!

आज सम्पूर्ण विश्व को कोरोना महामारी को प्रकृति की चेतावनी समझकर प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर रखने और फ़िलहाल घर की दहलीज़ के अंदर ही रहने की नितांत आवश्यकता है!

शायद यही प्रकृति की इच्छा है, और प्रकृति की इसी ईच्छा में ही सम्पूर्ण मानव जाति की भलायी है!

श्यामसागर

10.

"कोरोना" तो, एक बहाना है, प्रकृति को तो, यह बताना है,
जो किया खिलवाड़ तूने मानव, उसी का परिणाम बस दिखाना है।

कोरोना- आज ये नाम ने मानव जाति के दिल-दिमाग में दहशत डाल दी है, आखिर कैसी ये महामारी है? जो एक देश में ही नहीं, बल्कि विश्व में भी भयानक डर भर दिया है विकसित देशों को तक प्रभावित कर दिया एंव पूरी तरह सोचने के लिए मजबूर कर दिया।

प्रकृति के इस रवैये से तो एक ही बात साबित हो गई, मानव तू कितना भी महान क्यों ना होए, लेकिन मेरे से ज्यादा नहीं, मेरे परिवार के बीच में ही तू जी सकता है, सब कुछ कर सकता है, और ये अधिकार भी मैंने तुझे मानव बना कर दिया है। मैं माँ बनकर तुम सब प्राणियों को बच्चों जैसा पाल रही हूँ, लेकिन तुम लोग मेरे साथ पूरी तरह खिलवाड़ करने में लगे हुए हो, जैसे-जैसे तू बुद्धिजीवी होते गया, वैसे-वैसे ही तू सबसे पहले मुझे ही नुकसान पहुँचाया, फिर भी में सहन करती रही, कि बड़ी-बड़ी बात जो तू कर रहा है वो अमल एक दिन जरूर करेगा, लेकिन तू मानव के साथ-साथ मुझे भी बेवकूफ बनाने में लग गया तो देख तेरी बेवकूफी का अंजाम तुझे ही कितना भारी पड़ रहा है।

अभी भी संभल जा हमें समझा रही है, और जो सावधानी" कोरोना" को लेकर जो तू कर रहा है उतनी ही सावधानी मेरे लिए भी जरूर आजीवन करना और आने वाली पीढ़ी को विरासत के रूप में यह समझाईश जरूर देना।

प्रकृति हम मानव को सिर्फ अभी चेतावनी दे रही है, क्योंकि जिंदगी के लिए जीना जरूरी है और जीने के लिए स्वस्थ्य रहना जरूरी है और इसके लिए हमें प्रकृति की ही जरूरत पड़ेगी ना कि हमारी जाति, धर्म, अमीरी, गरीबी. पैसे, रिश्ते आदि की ।

इसलिए हे मानव जो तेरी आज आंखें खुली होने के बाद भी बंद कर रखा है उसे अब खुद खोलने का वक्त आ गया है और लोगों को भी सावधानीपूर्वक रहने की हिदायत पहले खुद अमल कर फिर दूसरों को दे वरना।

देख मानव, तेरे बीते कल के गन्दे मन भाव का परिणाम,
देख और, आज मेरी क्षणिक भर अंगड़ाई का परिणाम,

रमा "प्रेम-शांति"- बालाघाट

11.

आज विश्व एक वैश्विक महामारी से जूझ रहा है। महामारी एक ऐसी परिस्थिति है, जहां एक बीमारी बड़ी तेजी से फैलती है; तथा हमारे पास उसका कोई इलाज नहीं होता। चाइना से उपजे इस महामारी का कारण है, परमाणु निर्माण के कार्य के समय हुई गैस के रिसाव से पनपा एक विषाणु के कारण हुई है। इस बीमारी का संक्रमण बहुत तेजी से सभी धातुओं पर अपना असर छोड़ता है।साथ ही साथ किसी के संपर्क में आने से एक इंसान से दूसरे इंसान को प्रभावित करता है।

सच यही है कि आज के इस आधुनिक युग में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं; पेड़ों को काटना, अनावश्यक धरती से खनन आदि सभी धरती के जीवन चक्र संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। मनुष्य की जरा सी लापरवाही एक भयावह रूप ले चुकी है। इस समय प्रकृति की चेतावनी हम इस रूप में ले देख सकते हैं कि, देश में बेमौसम बरसात और ओलावृष्टि हो रही है, जिससे हम इस वायरस को फैलने से रोकने में और भी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। अतः इससे हम प्रकृति की चेतावनी ही समझें, कि यह मनुष्य जो अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं; उन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं, परंतु फिर भी हमारी प्रकृति हमें इस समस्या से उबारने में पूर्णतया सक्षम है, परंतु हमारा थोड़ा सा सहयोग चाहती है, जैसा कि हम जानते हैं कि यह वायरस संपर्क में आने से

फैलता है। इस क्रम को तोड़ने में हम अपना सहयोग दे सकते हैं। यदि हम अपने लोगों के बीच दूरी बनाकर रखेंगे और खुद को स्वच्छ रखेंगे तो हम इस महामारी से के जीवन चक्र को तोड़ने में सक्षम हो सकते हैं।

मैं आप सब से पूछना चाहूंगी क्या हम अपने और अपनों की जान बचाने के लिए अपना इतना सा सहयोग नहीं दे सकते?

सोनम लड़ी वाला

12.

आज संपूर्ण विश्व में जो महामारी फैली हुई जिससे पूरी मानव जाति खतरे के भय से भयभीत है और उससे बचने के लिए सभी अपने अपने घरों में बैठे हुए हैं, यह प्रकृति की एक चेतावनी ही तो है हमने प्रकृति के साथ बहुत खिलवाड़ किया है जगह जगह गंदगी फैलाई है, वृक्षों की कटाई की है, जल प्रदूषण, थल प्रदूषण, वायु प्रदूषण हर तरह का प्रदूषित वातावरण किया है। देश की संस्कृति को भी नहीं छोडा, महिलाओं, बच्चियों के अत्यधिक शोषण किया है नन्हीं नन्हीं बच्चियों की चीखों का बदला प्रकृति ले रही है, प्रकृति ने तो हमें परोपकार करने की सीख दी थी, सबको खूबसूरत सी दुनिया दी थी, हम मगर उसका सही उपयोग नहीं कर पाये और मानवता को भूल गये, आज मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च, सब सुनसान हैं साधुसंतों की सुरक्षा के लिए उनको भी एकांत कर दिया है हमारे लिए यह प्रकृति की बहुत बडी चेतावनी है। अब बस घरों में रहकर ईश्वर से प्रार्थना करें कि इस बीमारी से पूरे विश्व को मुक्ति मिल जाये और हम फिर से आपके द्वार पर पूजन भक्ति करें और अब प्रकृति के साथ कभी खिलवाड नहीं करेंगे।

सभी से मेरी यही प्रार्थना है कि प्रशासन के आदेशों का पालन करें और घरों में ही रहकर कोरोना से देश की रक्षा करें!

मीना विवेक जैन

13.

हमारा जन्म, जीवन और मृत्यु प्रकृति में ही होती है। पंचभूतों से बना शरीर उसी में मिल जाता है और आत्मा अगली यात्रा पर निकल जाती है। शरीर, जीवन की यह यात्रा प्रकृति पर निर्भर रहती है।

मनुष्य के लालच, अहंकार, महत्वाकांक्षा और दूसरों का छीन कर हथिया लेने की प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। युद्ध, छल, प्रपंच के द्वारा दूसरों पर शासन करने की चाह सदा से रही है। आधुनिक मशीनों और हथियारों ने इसे एक ऐसी विकराल समस्या बना दिया है कि जिसका समाधान यह विश्व दो विश्व युद्धों के बाद भी नहीं ढूँढ पाया। तीसरे युद्ध की शंका सदैव बनी रहती है।

औद्योगिक क्रांति के बाद इन संघर्षों की होड़ में प्रकृति हाशिये पर चली गयी। वायु, जल, मृदा, भोज्य पदार्थ सभी प्रदूषित हो गये। मौसम चक्र में व्यवधान,बाढ़, तूफान, नदियों का प्रदूषण, जीव हत्या आदि अनेक प्रकृति विरोधी कुकर्मों ने मनुष्य को भी पशु तुल्य बना दिया।

कोरोना प्रकट हुआ या प्रकट करवाया गया विश्व समाज इस पर चिंतन कर रहा है। कोरोना एक प्रयोगशाला का ही परिणाम है। उसके पीछे षड्यंत्र था या कोई भूल.. यह अभी पता नहीं है। लेकिन इतना निश्चित है कि यह प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम है।

डी.एन.ए.,जीन्स, वायरस, रसायन अणु विखंडन, न्यूटरोन विखंडन आदि शब्द, प्रयोग और इनके परिणाम दिखाई देने लगे हैं। पशु, मानव शरीर, वनस्पति यहाँ तक की पदार्थ की संरचना (आणवीक रचना) किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा। सभी जगह मनुष्य ने छेड़छाड़ या शोध

किया है। शोध का अधिकांश प्रयास अधिक से अधिक धन, हथियार और आराम के साजो-सामान एकत्रित करने के लिए किया गया है। इस कारण उद्योग, परिवहन, युद्ध आदि सभी प्रकृति को ही डराने लगे। आखिर इन सभी गतिविधियों के मूल में प्रकृति द्वारा उत्पन्न किया हुआ मानव मस्तिष्क ही है अर्थात मानव ही है प्रकृति ने भी बाढ़, तूफान, बीमारियों, अतिवृष्टि, सूखा आदि दिखा कर अपना रोष प्रकट किया है। सबसे नया क्रोध प्रकृति ने कोरोना वायरस के रूप में प्रकट किया है। आखिर यह वायरस कोई प्राकृतिक वायरस तो है नहीं। यह चीन के वूहान शहर की "वायरोलॉजी" प्रयोगशाला में वैज्ञानिकों द्वारा ही विकसित किया गया या किसी पशु अथवा पक्षी से प्राप्त किया गया है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हुई वह भी या तो लापरवाही से या कुविचार से। जो भी हुआ भविष्य में कारण पता चल जायेंगे, किंतु वर्तमान में यह बीस हजार लोगों की जान ले चुका है। यह इसलिए भी भीषण है क्योंकि सामाजिक प्राणी मनुष्य को अकेले रहने पर विवश कर पाने में सफल रहा है। यह मनुष्य के प्राण भी ले रहा है और उसे अपने स्वाभाविक और तौर-तरीके बदलने पर भी विवश कर रहा है। आज सबको मदद देने वाला अमेरिका स्वयं मदद माँग रहा है वह भी कुछ सप्ताहों में। विकसित देश बेबस हो रहे हैं। चीन अपने ही जाल में फँसा दिख रहा है।

निस्सन्देह यह कोरोना एक नसीहत तो है ही, थप्पड़दार चेतावनी भी है।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

14.

गुलज़ार साहब की इन पंक्तियों से अपनी बात की शुरुआत करती हूँ, कि-

ये शहरों का सन्नाटा बता रहा है,
इंसानों ने कुदरत को नाराज़ बहुत किया है

एक समय था जब मनुष्य प्रकृति के बीच में ही रहता था और प्रकृति पर ही निर्भर था। जनसंख्या और संसाधन सीमित थे। आवागमन के साधन कम होने से एक घर और एक ही गाँव में कई पीढियाँ बीत जाया करती थीं। अतः किसी स्थान विशेष की संसकृति एक विशिष्टता लिये हुए होती थी। विज्ञान के विकास के साथ वैश्वीकरण और नवीनता की ओर आकर्षण ने अपने रीति रिवाज, संस्कृति एवं आदतों के त्यागने पर विवश कर दिया। नवीनता को अपनाने की वजह से, स्वयं को आधुनिकता की श्रेणी में खड़ा करके हम प्रकृति से दूर--दूर- और बहुत दूर होते चले गए। यहाँ तक भी ठीक था पर, आधुनिकता के अहंकार में हमने प्रकृति का दोहन भी शुरू कर दिया।

जहाँ कुएँ से बाल्टी-बाल्टी पानी खीचने का श्रम हमे पानी के सदुपयोग को विवश करता था वहीं सीमित जनसंख्या और सीमित आवश्यकताओं के कारण जल, स्थल और वन का संतुलन बना हुआ था।

आधुनिकता के दौर में अब, जब वनों की जगह सीमेंट के जंगलों ने ले ली हैं, तो पानी का भरपूर दोहन होने लग। गाड़ियो और कारखानों के प्रदूषण, और वनों के ह्रास से ऋतुओं का चक्र भी असंतुलित हो गया।

अति वृष्टि, अल्प वृष्टि, भीषण गर्मी, बाढ़, तूफान, भूकंप द्वारा प्रकृति समय समय पर सचेत करती है, पर मनुष्य है कि विकास और आधुनिकता के फेर में प्रकृति के उस संकेत को नजर अंदाज कर उसे अंगूठा दिखाता रहा।

स्वयं को सशक्त बनाने की महत्वाकांक्षा का ही परिणाम है यह- कोरोना वायरस।

वैसे इस महामारी प्रकृतजन्य न होकर मानवकृत है किन्तु इसकी तह में तो प्रकृति से खिलवाड़ करना ही मुख्य रूप से दिखाई देता है।

जो भी हो प्रकृति से खिलवाड़ करने का परिणाम इसी रूप में समय-समय पर हमारे सामने उपस्थित होता रहा है। यद्यपि प्रकृति बहुत सौम्य और धैर्यवान है, पर मनुष्य का अतिवाद उसे रुष्ट करने को पर्याप्त है।

परिणति स्वरूप प्रकृति की विभीषिका कितनों को ही काल कवलित करके अपनी शक्ति मनवा ही लेती है।

इसीलिए कहा-

अनजानी भूलों पर भी वह अदयदंड तो देती है।
पर बूढ़ों को बच्चों-सा प्रकृति भाव से सेती है।

वंदना दुबे

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

1. व्हाट्सअप समूह 2 फरवरी 2016 से।
2. फेसबुक समूह 2 फरवरी 2016 से।
3. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर 7–8 रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन 1 नवंबर 2016 से 31 दिसम्बर 2019 तक ।
4. फेसबुक पेज 16 फरवरी 2017 से।
5. मासिक वेब पत्रिका 1 जुलाई 2017 से।
6. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन 25 मार्च 2018 से।
7. ईबुक प्रकाशन 15 जनवरी 2019 से।
8. अब तक लगभग 450 से अधिक पुस्तकों और 20 साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और 955 सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।
9. 1 जून 2019 से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।
10. 21 सितंबर 2019 से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।
11. 1 अक्टूबर 2019 से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।
12. 119 रचनाकारों को आपातकाल में सृजन फुलवारी में सृजन हेतु 'कलम के सिपाही सम्मान 2020'।
13. प्रकाशन द्वारा 730 दिनों में 365 से अधिक किताबों, मासिक अंक, समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी का प्रचार एवं हिन्दी सेवा एवं सम्मान हेतु वर्ल्डबुक ऑफ लंदन सम्मान 2020 प्राप्त।
14. 'आपतकाल मे सृजन फुलवारी' में 121 किताबों का 51 दिन में प्रकाशन हेतु ''ग्लोबल बुक ऑफ लिटरेचर अवार्ड्स 2020'' प्राप्त।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-095-7

मूल्य 80/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/